पाठ–17
सीधी–सी–बात

मूल पाठ :–

शक्ति होती है मौन (पेड़ कहते हैं मुझसे)

और गहराई भी (कहती हैं जड़ें)

और पवित्रता भी (कहता है अन्न)

पेड़ ने कभी नहीं कहा :

'मै सबसे ऊँचा हूँ !'

जड़ ने कभी नहीं कहा :

'मैं बेहद गहराई से आई हूँ !'

और रोटी कभी नहीं बोली :

'दुनिया में क्या है मुझसे अच्छा !'

एक विशालकाय वृक्ष से लेकर एक घास तक, बहती हुई नदियों से लेकर नन्हें परिंदे तक; इन सबसे हम कुछ–न–कुछ सीख सकते हैं। प्रकृति के नियम–कायदे हमसे भिन्न हैं। वह हमारी तरह आवरण नहीं करती, बनावटी नहीं होती, झूठ नहीं बोलती, अभिमान नहीं करती; जबकि हम हर कदम पर इसका सहारा लेते हैं। हमारा और उसका आचरण एक जैसा नहीं है। ऐसा क्यों, जबकि हमारा निर्माण प्रकृति के विभिन्न तत्त्वों से ही होता है और उसके बिना हमारे जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। प्रकृति की विराटता के समक्ष हम बिल्कुल बौने हैं। लेकिन, प्रकृति कभी इसका प्रचार नहीं

करती। दूसरी ओर, हम मनुष्य अपना प्रचार स्वयं करते रहते हैं। हमें लगता है कि हमने जो ज्ञान और वैभव अर्जित किया है, वही सबसे श्रेष्ठ है। हमसे श्रेष्ठ कोई दूसरा नहीं है। हम अभिमान से भरे रहते हैं, जबकि प्रकृति स्वयं पर लेशमात्र अभिमान भी नहीं करती है।

कवि पाब्लो नेरूदा की यह कविता 'सीधी–सी–बात' इन्हीं बातों की ओर संकेत करती है। यह कविता पेड़, जड़ और अन्न के साथ कवि के संवाद के रूप में है। इस संवाद के जरिए हम समझ सकते हैं कि हम कितनी तरह के झूठे अभिमानों के साथ अपनी जिंदगी जीते हैं।

पेड़, जड़ और अन्न कवि को बताते हैं कि शक्ति क्या है। पेड़ कहते हैं कि शक्ति मौन है। जड़ें कहती हैं कि शक्ति गहराई है। और, अन्न का कहना है कि पवित्रता भी शक्ति है।

पेड़, जड़ और अन्न से कवि को सीख मिलती है। पेड़ अपनी ताकत का परिचय कभी बोलकर नहीं देते। वे कितने वर्षों से एक स्थान पर टिके रहते हैं। आँधी–तूफान, धूप–हवा सबको चुपचाप झेलते हुए न जाने कितने युग वे देख जाते हैं। जब आंधियाँ गुजर जाती हैं, तूफान शांत हो जाते हैं; तब भी वे किसी से यह नहीं कहते कि देखी मेरी ताकत; मुझे कुछ नहीं हुआ । वे चुप रहते हैं। एक–दो की कौन कहे, न जाने ऐसे कितने झंझावातों को वे झेल जाते हैं। मौन रहकर। उन्हें अपनी शक्ति पर भरोसा होता है। पर, वे इस शक्ति का कभी प्रचार नहीं करते। इस शक्ति के घमंड में किसी को चुनौती नहीं देते। वे बड़बोले नहीं बनते। उनका मौन रहना एक बड़ी विशेषता है। यह मौन एक बड़ी शक्ति है।

इस तरह पेड़, जड़ और रोटी यानी अन्न से हमें सीख मिलती है कि हमें विनम्र होना चाहिए और आत्मप्रशंसा से दूर रहना चाहिए। अपनी अच्छाइयों का अभिमान नहीं करना चाहिए। पेड़ की ऊँचाई, जड़ की गहराई और रोटी का महत्व घट जाएगा, यदि य अपनी बड़ाई स्वयं करने लगें। ये मौन हैं, इसलिए महान हैं।

पाब्लो नेरूदा